શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૨૪૬
837

॥ धर्ममाला अमोलकरत्न ॥

॥ जैन सोतंबरीश्रावकोंकी ॥

श्रीशीतलप्रसाद छाजेड जौहरी काशी
बनारस निवासीने बनाकर संशोधित
और प्रकाशित किया।

यह पुस्तक समस्त श्रीसंघके साहाय्यसें छपाई गई है
साधर्मी भायोके हितार्थम्।

इस पुस्तककी वा आशयकी छपवानेका अखत्यार पुस्तक
बनानेवाले की परवानगी बिना दूसरेको नहीं होगा
मुताबिक ऐक्ट २० सन १८४७ व ऐक्ट २५
सन १८६७ इस्वीके फीस देकर पक्की
रजिष्टरी कराया है।

कलकत्ता
बड़ाबाजार ७५ नं० तुलापट्टीसे
रामनारायण पालने
"नारायण" यन्त्रमें छपी।
॥ सन १८९३ ॥

पहिलाबार १०००० कीमत दो आना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ सांकेतिकसूचीपत्र ॥

॥ इस पुस्तकका इसारा इस मुजबहै। भ० ऐसा लिखाहै उसे भगवान समझना वा इसके पीछे अंक लिखा होय जहां तो जानना अंक मुजब तीर्थंकर को जैसे १ का अंकहै तो पहले तीर्थंकर समझना वा जहां कल्या० ऐसा लिखाहै वहां कल्याणक जानना वा इसके आगे अंक दीया होय जहांपै वहां अंक मुजब कल्याणक जान लेना के यहांपर इत्ते कल्याणक भएहैं। भगवानके वा कल्याणक पांचहै भ० के उसका पहला हरफ लिखा है एक २ उसे कल्याणक समझना जैसे च० ऐसा लिखनेसे चवन जानना इसीतरे ज० सें जनम दि० सें दिक्षा ज्ञा० सें केवल ज्ञान मो० सें मोक्ष समझ लेना और जहां मं० ऐसा लिखाहै उसे मन्दिरजी समझना वा जहां ध० ऐसा लिखाहै उसे धर्मशाला जानना वा जहां को० ऐसा लिखा है वहां कोस समझ लेना इसके आगे अंक लिखाहै उसे इत्ते कोसहै वा जहां मी० ऐसा लिखा है वहां मील समझना उसके आगे अङ्क दिया होय तो इत्ते मीलहै ऐसा जानना वा जहां रुपया सुका आना पाइ लिखाहै उसको रेलके तीसरे दरजेका मासूल जानना यहांसे वहांतक इत्ता दाम टीकटका एक आदमी का लगेगा जहां रेलका रस्ताहै वहां रेलका रस्ता लिखाहै जहां खुसकी रस्ता सड़कका वा पगडंडीकाहै वहां वैसा लिखाहै जहां सहरहै जहां बजारहै जहां गांवहै जहां जंगल पहाड़है जिनस सीधा सामान मिलताहै वा नहीं मिलताहै सवारी मिलतीहै सब वा बैल गाड़ी फकत वा नहीं मिलतीहै सब लिखाहै दर्पणवत् देख लेना।

॥ और नक्सेमें ८ निसान बनेहै मंदिरजी पहाड़ तीर्थावछेद खुसकी रस्ता सड़कका रेलके ष्टेशन जहां तीर्थ मन्दिरजीहै वा रेलकी लैनहै वा जो ष्टेशनपर कुछ नहींहै वा जिस ष्टेशनसे रेलकी लैन बहोतहै उसको जंक्शन लिखा है वा तीर्थोंके नाम सहरोंके ग्रामोंके नाम वा ष्टेशनोंके नाम वगैरा सब हरफोंमें लिखाहै जहां ज० ऐसा लिखा होय उसे जंक्शन जानना करकङ्कनवत् खुलासा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सर्वतीर्थों की व्यवस्था ॥

१ कलकत्तेशहरमें १६ वें भगवानजीका मन्दिर बड़ाबाजार अफीमके चौरस्ते पर है ६ घरदेरासरजी है धर्मशाला बांसतल्ला नम्बर ५८ में हैं वहां से कोस १ माणिकतल्ला ष्ट्रीट होलसीबगानमें श्रीदादेजी के बगीचे में मन्दिर धर्मशाला है उसके पास २४ में भगवानजीका मन्दिर है। उसके पास १० में भगवानजीका मन्दिर है। उसके वगल में नया मन्दिरजी बनता है वहां से पीछे आन कर गङ्गापार जाने को पुल बना है गाड़ी वगैरह जाती है हवड़ेमें रेलका ष्टेशन है। १—१ हवड़ा जंक्शन ष्टेशन मील १ सहरसे है वहांसे रेल पर सवार होना उतरना होता है। दो लैन रेलकी है। कार्डलैन, लूपलैन से बैठकर नलहटी जाना। मील १४५ मासूल १॥/)।

२ वर्द्धमान जंक्शनसे दो लैन भईहै सहर कोस १ है सवारी मिले हैं

३ नलहटी जंक्शन ष्टेशन उतरके दूसरी रेलमें बैठकर यहां से अजीमगंज मकसुदाबाद जाना। मी० २८ मा० ।/)॥

४ अजीमगंज ष्टेशन उतरना सहर पास है। ध० बजारमें है वहां मं०। भ० के बहोतहै वा रामबागमें है वहांसे गङ्गापार नावमें जाना १—४ बालुचर सहर है वहां ध०। मं०। भ० के कई है वहां से खुसकी रस्ते को० १ कीरतबाग है सवारी सब जाय है मं०। भ० के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ध० है वहांसे को० २ कठगोला है ध०। मं०। भ० का है वहांसे कासमबजार को० ५ है ध०। मं०। भ० का है वहांसे पीछा आवना।

॥ अजीमगंजसे रेलपै बैठकर नलहटी आनके दूसरी रेल पर भागलपुर जाना। मी० १४७ मा० १॥।≠)॥।

५ भागलपुर ष्टेशन उतरना पासमें ध०।मं०।भ० का है बजार पास है

१—५ इस मन्दिरजीके उतरके कोनेंमें कसौवटी स्याम पाषान के दोहरे चरनकी स्थापना है वह चरन प्राचीन खास मीथलाजी तीर्थ-केहै कारणसे यहां स्थापना भईहै उस तीर्थके भावसे पूजा दर्शनकरना चाहिये यहांसे को० २ खुसकी रस्ते सड़कहै सवारी सब जायहै।

२—५ चंपापुरी नगरी तीर्थहै सहर नाथनगरमें ध०।मं० १२ में भ० काहै यहां कल्या० ५ च० ज० दि० ज्ञा० मो० भयेहैं १ मं० में पांचों कल्याणकके चरणोंकी स्थापना है ध० के पासमें चम्पानाला वहताहै पीछे ष्टेशन पर आयके लक्खीसराय जाना। ६१ मा० ॥।≠)

६ लक्खीसराय जंक्शन ष्टेशन उतरना बजारमें ध० है यहांसे दो लैन रेलकीहै कार्डलैनकी रेलपर मननपुर जाना मी० ८ मा० ≠)॥

७ मननपुर ष्टेशन उतरना ग्रामहै सवारी बैलगाड़ी की मीलेहै खुसकी रस्ते को० ३ जाना।

१—७ काकंदीनगरी तीर्थहै ग्राममें जिनिस मिलेहै ध०। मं० ८ में भ० काहै कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयेहै यहांसे खुसकी रस्ते लकुवाडगांव जाना बैल गाड़ी पर।

२—७ लछुवाड़ग्राम को० ७ है ध०। मं०। भ० काहै जिनिस मिलतीहै पहाड़ पर डोली जायहै तलेटी तक बैलगाड़ी। वहां से क्षत्रीकुण्डनगर तीर्थ को० १ पहाड़ परहै चढाई को० १ की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है २४ में भ० के कल्या० ३ च० ज० दि० भयेहैं तीनों स्थान जुदे जुदे हैं १ पहाड़ पर २ नदी किनारे पहाड़पे ज० नदी किनारे च० दि० के स्थान मं० बनेहैं यात्रा करके चले आना रहनेकी जगे वहां नहीं है भता खानेका लेजाना साथमें ॥ यहांसे पीछे खुसकी रस्तेसे मननपुर ष्टेशन आन कर रेलमें जो कलकत्तेको जाय है उसमें पीछा मधुपुर ष्टेशन जाना। मी० ६८ मा० ॥≈)॥

---

८ मधुपुर जंक्शन ष्टेशन उतरना यहांसे दूसरी रेलमें ग्रेटी जाना।

---

९ ग्रेटी ष्टेशन उतरना पासमें ध०। मं०। भ० का है सहरहै बैल-गाड़ी वगैरह सवारी सब मीलेहैं यहांसे खुसकी रस्ते सड़कके जाना वराकट नदी को० ५ है। मी २३ मा० ।)॥ ग्रेटीका लगेहैं।
१—९ वराकट नदीको शास्त्रमें रिजुवालीका नदी तीर्थ कहाहै वहां ध०। मं० है २४ में भ० का कल्या० १ ज्ञा० भया है जिनिस सब मिलतीहै वसती नहींहै वहांसे खुसकी मधुवन जाना सड़क है।
२—९ मधुवन को० ४ है वहां ध० बहोतहै दरवाजेके सामने वट-वृक्षके नीचे अधिष्टाताका मं० चमत्कारीक स्थापनाहै जिनस सब तथा डोली मिलतीहै चिरकीग्रामसे रस्ता जुदा गया है मधुवनको।
१ सांवलीयाजी २३ वें भ० का मं० (वा) मं० भ० के बहोतहै भण्डार कारखना है ध० के पास थोड़ी दूरपे समेत शिखरजी तीर्थके पहाड़की सीमाहै वहांसे पहाड़को वधायके पूजा वगैरे करके दूधकी धारा देते भये धूपखेते वाजीत्र वजाते यात्रा करने कि रितीहै
१ ऊपर जाके को० १ पे गन्धर्वनालाहै वहां ध० है जात्री लोगोंके वास्ते भत्तापानीकी जोगवाइ संघके तरफसे रहतीहै वा उपर जाके दो रस्तेहैं १ पत्थरमें हरफ खुदे भए रस्तेका नाम पेड़में लगाहै उस रस्ते पगडंडीके जाना वांये हाथके सडकका रस्ता छोड़ देना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१ ऊपर जाके को० १ पै सीतानालाहै जल हमेसा वहताहै वहां अधिष्टाताका स्थान बनाहै उनको पूजा करके उपर जाना।
१ इस पहाड़पै २० टुंक जुदे जुदे हैं कल्या० २० मो० भएहैं टुंको पर गुमटियोंमें चरनोंकी स्थापना प्राचीनहैं वीसों भ० के कल्या० इस मुजब भ०नोके हुवे है २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१३।१४।१५। १६।१७।१८।१९।२०।२१।२३। वें भ० न वगैरोंके भयेहैं यहां।
१ इस पहाड़पै ४ गुमटियोंमें ४ भ० के चरणोंको स्थापनाहै १।१२ ।२२।२४। वें भ० की सो नई स्थापना करी है इन भ० नोंके कल्या० यहां नहीं भयेहैं और तीर्थस्थानोंमें कल्या० भयेहैं मो० यहां नही।
१ वीस वें टुंकपै २३ वें भ० का मं० नया वनताहै इसको मेघाडंवरका टुंक कहतेहैं टुंकसे थोड़ी दूरपै सड़क बनीहै नीचे आनेको वा टुंकसे को० पाव पर सीतानालेका सोता जारीहै पानी रहताहै
१ सव टुंकोके वीचमें १ मं० है वहोत विशाल उसको झुरमठका मं० कहतेहैं उसमें २३ वें भ० की मूर्त्तीयें प्राचीन वहोत मनोहर विराजमानहै पानीका झरना वा कुण्ड वा ध० वा वगीचा हैं।
१ इस तीर्थके पहाड़को प्रदक्षिणा को १२ को दीजायहै वा यात्री लोग पहाड़पर जूता वगैरा पहर कर नहीं जातेहैं कारण समस्त पहाड़ कंकर २ पूजनीकहै सव तरोंको विने रखनेकी रितीहैं।
१ पहाड़पर रातको रहनेका व्यवहार नहींहै आगेसे वा पहाड़में पहले वहोत भय था सिंहादिक जानवरोंका अव नहींहै तीर्थकी ऐसी महिमाहै आजतक कोई यात्री लोगोंको जानवरसे खतरा नहीं भयाहै वा संघके समुदायके साथमें १।२ ढोलवाले बजाते भये लेजातेहैं वा ध० के वाहर जंगलमें रातको जाना मनाहै भयसे वा यात्रा वगैरा करके पीछा उसी रस्तेसे गेटो आयके रेलमें मधुपुर ष्टेशन आना वहांसे रेलपर सुकामा जाना। मी० १२२ मा० १।)॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१० मुकामा जंक्शन ष्टेसन उतरना सहरहै यहांसे गङ्गापर ष्टीमरमें जाना रेल दरभङ्गे होकर सीतामडी गई है उसमें जाना १०२। १≶)

११ सीतामडी ष्टेसन उतरना सहर में ध० है। १३० मा० १।≶)॥
१—११ मिथिलानगरी तीर्थ इसको शास्त्रमें कहा है यहां कल्या० ८ भए हैं १९ में भ० के ४ च० ज० दि० ज्ञा० और २१ में भ० के ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं अब खेत्र फरसना होती है स्थानादिक कुछ वहां नहींहै आगे थे मंदरजीमें चरण अब खास चरण यहांके कारण वस भागलपुरके मंदरजीके कोनेमें विराजमान है तीर्थ वो छेद है इसका खुलासे हाल पुस्तकके अन्तमें लिखा है॥ यहांसे उसी रस्तेसे पीछे रेलपर मुकामे होकर बखतीयारपुर जाना।

१२ बखतीयारपुर ष्टेसन उतरना सहरमें ध० है यहांसे खुसकी सड़क का रस्ता है सवारी बैलगाड़ी वगैरा मिलती है यहांसे विहार जाना
१—१२ सुबे विहार को० १० सहरहै इसको शास्त्रमें विशाला-नगरी कहते हैं ध० लालवागमें मं०। भ० काहै और मं०। भ० के पाड़बजार मैथीयान महलेमेंहैं यहांसे खुसकी रस्ते पावापुरी ग्राम जाना सवारी सब जाती है मिलती है।
२—१२ पावापुरजी तीर्थको० ३ है ध०। मं०। भ० काहै जीनस मिलतीहै गांवसे पूर्व को० पाव प्राचीन समवसरन जिसको हस्त-पाल राजाकी सुल्कशाला शास्त्रमें कहते है यहां अन्त वख्तके समवसरनकी रचना देवतोंने करीथी १६ पहरतक भ० ने देसना देकर मुक्ती पधारे थे और तलावमें १ मं० २४ में भ० काहै गांवके पास जिसको जलमंदीरजी कहतेहैं वह जगे भ० को अग्नि-संस्कार इन्द्रोंने कराया था यहां २४ में भ०का कल्या० १ मो० भया है तलावके कीनारे १ मं० भ० का औरहै उसके पासमें समवसरन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नया बनाहै जिसमें प्राचीन समवसरणके चरण लायके स्थापित करे हैं यहांसे खुसकी रस्ते गुनाएजी जाना सवारी सब जाय है।
३—१२ गुणावां ग्रामको० ६ इसको शास्त्रमें गुणशीलाचैत्य कहा है २४ में भ० ने १४ चौमासा यहां करेथे इसे तीर्थ है तलावके बीचमें मं०। भ० काहै ध० कीनारे परहै जौनस मौले हैं यहांसे खुसकी राजग्रही जाना सवारी सब जाती है।
४—१२ राजग्रहीनगरीतीर्थ कोस ६ है सहरमें ध०। मं०। भ० काहै तीर्थ पांचों पहाड परहै पहाडके नाम वैपलाचल, रत्नागिरि, उदयगिरि, सुवर्णगिरि, वैभारगिरि पहले पहाडपर २० में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै ५ वें पहाडपर ११ गणधर महाराज २४में भ०के मोक्ष गएहैं डोलीपहाड पर जातीहै रातको नहीं रहना होताहै खानेको भत्ता साथमें ले जातेहैं नीचे अनेक स्थान बने हैं सोनभंडार राजा सेणिकका शालिभद्रजी नीरमालकुंड गरमपानीके कुण्ड यहांसे खुसकी वडगांव जाना सवारी जाती है।
५—१२ बडगांव कोस ४ है इसको शास्त्रमें धनवर गुब्बरग्राम कहा है यहां पहले गणधर २४ में भ०का जन्मस्थानसे तीर्थ है ध०।मं०। भ० काहै उसमें मूरते सब बौध मतकी है १ मूर्त्ति कोनेमें २४ में भ० की अपनी है जौनस मिले हैं यहांसे खुसकी को० १२ वखतीयार-पुर ष्टेसन जाना वहांसे रेल पर पटना जाना। मी० २२ मा० ।)॥

१३ पटना ष्टेसन उतरना सहर को० आधा है चौंक बजार बाड़ेकी गलीमें ध०। मं०। भ० केहैं वहांसे कोस २ पर सेठ सुदर्शन का स्थान है उसे कवलदह कहतेहैं और को० १ पर वगीचेमें दादेजी का स्थानहै शास्त्रमें इसको पाडलीपुरनगर कहतेहैं यहां चन्द्रगुप्त चानोक्यकी राजधानी थी वा कोस्याबेस्या इहां भई थी। यहांसे रेल पर बैठके बांकीपुर जाना। मी० ६ मा० ।)।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१४ बांकीपुर जंक्शन ष्टेसन उतरना यहांसे दुसरी रेलमें बैठकर गयाजी जाना यह सहर है। मी० ५७ मा० ॥)

१५ गयाजी ष्टेसन उतरना सहरमें ध० सरांय है सवारी सब मिलती है यहांसे खुसकी जाना सडक है। मी० २८३ मा० ३॥)
१—१५ सहरघाटी कोस १० है सवारी जायहै आगे सडक नहीं है को० ४ हण्डरगञ्ज है वहांसे को० १ हटवरीयागांव पूर्वहै जाना १ शास्त्रमें इस स्थानको भद्दलपुरनगर तीर्थ कहाहै १० में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं अब तीर्थ वीछेदहै खेत्र फरसना होतीहै गांवके पास १ छोटासा पहाड़ है उसपर १ मंदीर बनाहै उसमें मूर्त्ती विराजमानथी आगे अबनहींहै १ पत्थरमें प्राचीन लीपी पालीहरफोंमें बहुतसा लिखा लगाहै नीचे देवीका मंदिर नदी है जिनस सब जगह मिलेहैं॥ यहांसे पीछे उसी रस्तेसे गयाजी आनकर रेलमें बांकीपुर ष्टेशन जाना वहांसे रेलपर दसरी बैठकर इलाहावाद प्रयागजी जाना।

१६ इलाहावाद जंक्शन ष्टेसन उतरना सहरहै बजारमें सरांये उतरनेको बहोतहै वहांसे खुसकी को० २ कौला है तथा नैनी जंक्शन ष्टेसनसे रेल झब्बलपुर वगैरेको होती बम्बई गई है।
१—१६ शास्त्रमें इसे पुरमतालनगर तीर्थ कहाहै यहां १ ले भ० का कल्या० १ ज्ञा० भयाहै तीर्थ वीछेदहै खेत्र फरसना होती है कौलेके भीतर १ ताखाना है उसमें सादे पाषाणके बड़े चरण रखे हैं श्रीज्ञानि भगवान जाने क्याहै कुछ हरफ लिखे नहींहै चिह्न भी हैनहीं पण्डा लोगोंके कहे मुजब लोग उसी चरणके दर्शन वगैरा करतेहैं सहरसे को० ३ पै मुठीगञ्जमें १ मं० शिखरबन्द ध० बनीहै प्रतिष्ठा नहीं भईहै कारणसे। इसे प्रागजी भी कहते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१।१६ यहांसे पपोसागांव को० १८ खुसकी रस्ते सड़कके हैं सवारी सव आती है उसको शास्त्रमें कोसंभीनगरी तीर्थ कहा है वहां ६ ठे भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै तीर्थ बोछेदहै खेत्र फरसना होतीहै जङ्गलहै जोनस कुछनहीं मिलती रस्तेमें बजार पड़तेहैं वहां १ छोटासा पहाड़है उसपर डोगम्बरियों का मन्दिर है नीचे ध० है कभी कभी घोली भई केसरके छीटे वरसतेहैं पहाड़पर॥ यहांसे पीछे प्रयागजी उसी रस्ते आयके रेलपर बैठकर पीछे मिरजापुर जाना तथा यहांसे रेल वहुत जगह गई है पछम दछिण वुन्देलखण्ड वगैरा। मी० ५५ मा० ॥≶)॥

१७। मीरजापुर इटेसन उतरना सहर को० आधा है वुड़ेनाथ महादेवके पास ध०। मं०। भ० के हैं बगीचेमें दादेजीका मंदिर है यहांसे रेलपर बैठके बनारस जाना। मी० ४० मा० ।≶)॥

१८ मुगलकी सराय जंक्शन इटेशनमें उतरना॥ यहांसे दूसरी रेल-पर बैठकर बनारस जाना। मी० १० मा० ≶)॥

१९ बनारस इटेशन राजघाटके उतरना इसको काशीजीवी कहतेहैं सहरहै सुतटोलेमें ध० है रामघाटपर श्रीकुशलाजीका बड़ा मं०। २३ में भ० सावलीयाजीकाहै ८ मं०। भ० के और है ४ तीर्थ जुदे जुदेहैं कल्या० १६ भ० चारके भयेहैं खुसकी रस्ता सड़कका है सवारी मिलेहैं जिनिस मिलेहैं सव। गंगा नीचे वहती है।

१—१९ श्रीभेलुपुरजी तीर्थ को० १॥ है ध०।मं०।भ० काहे २३ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै वहां दादेजीका मं० है बजार है वहांसे गङ्गाके तरफ थोड़ी दूर जाना।

२—१९ श्रीभदयनीजी तीर्थहै ध० है मं०। भ० काहे ७ में भ० के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै बजारहै राजा वक्षराजका घाट प्रसिद्धहै यहांसे को० ३ जाना खुसकी रस्ते सवारी जातीहै।
३—१९ श्रीसींघपुरजी तीर्थ है ग्राम है। ध० है मं० भ० काहै ११ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयेहैं वहांसे को० ४ जाना
४—१९ श्रीचंद्रवतीजी तीर्थहै ग्राममें ध० है गंगाजीके उपर मं० भ० का है ८ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै यहां से पौछे बनारस आना को० ७ है १ दीनमें ४रों तीर्थ हो जातेहैं तथा रातको भी रहतेहैं २।३ दिनमें करतेहैं॥ यहांसे अवध रेल पर बैठकर अयोध्याजी जाना। मील ११९ मासूल १॥।/)॥

---

२० अयोध्या ष्टेसन उतरना सहर को० १ है रातको ष्टेसनके पास बजारमें सरांयहै वहां रहना होयहै दिनमें सहर जातेहैं रस्तेमें जंगल पड़ताहै इसे डरहै हरतरोंका कटरा महलेमें ध० मं० भ० का है यहां कल्या० १९ पांच भ० के भयेहै इसको शास्त्रमें विनीता नगरी तीर्थ कहतेहैं इस मुजब भ० के कल्या० भयेहै मी० ४ मा० /)
१ ले भ० के कल्या० ३ च० ज० दि० भएहैं।
२ रे भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहै।
४ थे भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहै।
५ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं।
१४ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहै।
यहांसे खुसकी रस्ते को०२ फैजाबाद जाना सड़कहै सवारी मिलेहैं

---

२१ फैजाबाद जंक्शन ष्टेसन सहरहै वहां ध० मं० भ० का है यहांसे खुसकी रस्ते सावथी जाना सड़कहै सवारी सब जातीहै गोंड होकर रस्ताहै खुसकी को० ३० है।
१—२१ सावथीनगरी तीर्थ शास्त्रमें कहाहैं अब उसको खेटमेट

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

का कोला कहतेहैं महाराजे बलरामपुरकी राजधानीसे को० ५ जंगलमेंहैं तीर्थ बीछेदहै कोलेमें १ मं० भ० का बना है पहले सुरत भ० की विराजमानथी अब नहीं है वहां ३ रे भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं अब खेत्र फरसनाहै वहां जिनस नहीं मिलती जंगलहै। यहांसे पीछे उसी रस्ते फैजाबाद आयके रेलमें बैठकर सोहावल जाना। मी० ९ मा० ≠)।

२२ सोहावल ष्टेसन उतरना वहांसे नवराही गांव को० १ है बैल की गाडी मिलेहैं जादे नहीं कमती दिनमें जाना होताहै रातको ष्टेसन पर रहतेहैं रस्तेमें डरसे। मी० ७० मा० १/)॥

१—२२ श्रीरत्नपुरी तीर्थ शास्त्रमें इसे कहाहै अब नवराही नामसे प्रसिद्धहैं जिनस सब मिलेहैं गांवमें ध० मं० भ० का है १५में भ०के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं॥ यहांसे रेलपर लखनउ जाना

२३ लखनउ जंक्शन ष्टेसन उतरना वहां बजारमें सरांयहै दिनमें सहर जाना होताहै रातको नहीं रस्तेमें जंगल पडे हैं डर है इसे सहर को० ३ है सवारी सब मिलतीहै मं० भ० के सोंधीटोले वगैरेमें वा बगीचेमेंहैं यहांसे रेल पञ्जाबको गईहै ॥ यहांसे रेलपर बैठके कानपुर जाना। मी० ४६ मा० ।)॥।

२४ कानपुर जंक्शन ष्टेसन उतरना सहर थोड़ी दूरहै सवारी सब मिलेहैं ष्टेसन पै बजार सरांयहैं उतरनेको चावलपटीमें मं० भ० का है वहांसे कई लेन रेलकीहै ॥ यहांसे फरक्काबादको रेल गई है उसमें बैठके फरक्काबाद जाना। मील ८६ मासूल ॥≠)।

२५ फरक्काबाद ष्टेसन उतरना सहरहै बजारमें ध० मं० भ० का

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है ॥ यहांसे रेल पर बैठके कायमगञ्ज जाना। मी० १८ मा० ≠)॥

२६ कायमगञ्ज ष्टेशन उतरना सहरहै सवारी सब मिलेहैं वहांसे खुसकी रस्ते जाना सड़कहै। को० ३ कंपीला।

१—२३ श्रीकंपीलानगरी तीर्थहै सहरमें ध० मं० भ० काहै ३रे भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भएहैं। यहांसे पीछे कायमगञ्ज आयके रेलपै बैठके हाथरस जाना। मी० ८३ मा० ॥/)

२७ हाथरस जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै। ध० मं० भ० काहै यहांसे रेलकी कैलैनहै दूसरीरेलमें टुंडले होके आगरे जाना। ३० ।/)

२८ टुंडला जंक्शन ष्टेशनसे कै रेलकी लैनहै यहां उतरना ॥ यहां से दूसरी रेलमें बैठकर आगरे जाना। मील १५ मासूल ।)

२९ आगरा जंक्शन ष्टेशन सहरके पासहै उतरना रोसंनमहला नमकी मंडी मोतीकटरा बगीचे वगैरामें मं० भ० के कैहै। यहांसे रेल बहोत जगे गईहै भरतपुरजयपुर मथुरा लसकर गुवालीयर वगैरा

१—२९ लसकर सहरहै सराफे बजारमें गुवालीयरके कोलेमें वगीचेमें मं० भ० के ध० है। यहांसे खुसकी रस्ते सोरीपुरजीको० १८ है

२—२९ भरतपुर सहर है धर्म्मशाला मंदिर भगवानका है।

३—२९ मथुरा सहर है धर्म्मशाला मन्दिर भगवानका है।

यहांसे रेल पर बैठकर पीछे सकुराबाद जाना। मी० २३ मा० ।/)

३० सकुराबाद ष्टेशन उतरना वहांसे खुसकी रस्ते को० ६ बटेश्वर सोरीपुरहै सड़कहै सवारी बैलगाड़ीकी मिलती है।

१—३० श्रीसोरीपुरनगर तीर्थ शास्त्रमें कहा है अब दोनों नामसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रसिद्ध है तीर्थ बी छेद बराबरहै बहां। २२ वें भ० के कल्या० २ च० ज० भएहैं सहरसे को० १ यमुनाकी बीहडमें प्राचीन चरणकी स्थापनाहै उसके पासमें नए चरन १ गुमटीमें स्थापना करेहैं सहर में डीगम्बरियोंका मंदिर है अपना कुछ नहीं है॥ यहांसे पीछा सकुराबाद आयके रेलमें गाजीयाबाद जाना। मी० १३७ मा० १॥।)

---

३१ गाजीयाबाद जंक्शन ष्टेशन उतरके दूसरी रेलमें बैठना। यहांसे पंजाब लैनकी रेल पर बैठके मेरट जाना। मी० ३१ मा० ।≤)।

---

३२ मेरट ष्टेशन उतरना सहरहै सवारी सब मिलतीहै यहांसे खुस की रस्ते सड़कके को० १६ हस्तिनापुर जाना वहां जंगलहै जिनिस कुछ नहीं मिलेहैं बजार रस्तेमें गांव पड़तेहैं जिनिस वगैरा लेनेको
१—३२ श्रीहस्तिनापुरजी तीर्थको शास्त्रमें गजपुरनगर कहतेहैं यहां ध० मं० भ० काहै कल्या० १२ तीन भ० के भएहैं प्राचीन। नीस-हीये ३ जंगलमें बनीहैं पहले उसकी पूजा करते थे। मं० भ० का नया बना है इस मुजब कल्या० भ० के भएहैं।
१६ वें भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै।
१७ वें भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै।
१८ में भ० के कल्या० ४ च० ज० दि० ज्ञा० भयाहै।
यहांसे पीछे मेरट आयके रेलमें पीछे दिल्लीजाना। मी० ४४ मा०।≋)
मेरटसे रेल पंजाबको गईहै सहारनपुर अंबरसर लाहोरपटीयाला लोधीयाना काश्मीर वगैरा सहरोंको वहां भी ध० मं० भ० केहैं।

---

३३ दिल्ली जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के ३ नौव घरा चेलपुरीमेंहैं यहांसे को० ७ पुरानी दिल्लीहै वहां जाते रस्तेमें को० ३ पै बगीचेमें ध० मं० छोटे दादेजीकाहै वहांसे को० ४ बड़े

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दादेजीका स्थान चमत्कारी है वहांसे पीछे दिल्ली जाना ॥ यहांसे राजपुताना रेल पर बैठकर अलवर जाना। मी० ८८ मा० १)

३४ अलवर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० काहै। यहांसे रेल पर बांदीकुंइं होके जयपुर जाना। मी० ३७ मा० ।≠)

३५ बांदीकुंइं जंक्शन ष्टेशनमें रेल बदली जातीहै कभी नहीं बदली जातीहै आगरेसे रेल भरतपुर होकर मिलीहै मी० ५६मा०॥≠)

३६ जयपुर ष्टेशन उतरना वहां ध० बजारहै सहर यहांसे को० २ है ध० सांगानेर दरवाजेके पासहै मं० भ० के घोड़वालोकी गलीमें वा बगीचेमें वा दरवाजे बाहर वा दादे स्थानहै यहांसे खुसकी रस्ते आमेर को० ३ सांगानेर को० ३ है वहां ध० मं० भ० केहैं॥ यहांसे रेल पर बैठकर कीसनगड़ जाना। मी० ६६ मा० ॥≠)

३७ कीसनगड़ ष्टेशन उतरना यहांसे सहर दूरहै ध० मं० भ० के चौकमेंहै॥ यहांसे रेलपर बैठकर अजमेर जाना। मी० १८ मा०≠)

३८ अजमेर जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के लाखनकोठड़ी वगैरा महलेमेंहैं बगीचेमें बड़े दादेजीका स्थान बनाहै वहां देवलोक भया था यहांसे रेलकी लेन वहोत गैइं है मालवा मेंवात माडवाड वगैरे सहरोंमें॥ यहांसेरेल पर खरचीया जंक्शन इसको माडवाड जंक्शनवी कहतेहैं जाना। मी० ८७ मा० ॥≠)

३९ माड़माड़ जंक्शन ष्टेशन उतरना को० १ बैलगाड़ीपै जाना।
१—३९ बीठुरा गांवमें ध० मं० भ० काहै जिनिस मिलेहैं।
२—३९ वहां सम्बत् १९३९ मितो श्रावन दूसरा सुदी ११ को

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुपनाचन्दनमल्लजी लोढाको देकर आधी रातको श्रीसंघभगती कर-ताथा जमीन फाडकर २३ वे भ० गौड़ीजी महाराज प्रगटे तांवेकी कुंडीके भीतर विराजमान। जीता सर्प मस्तक पर छत्र करे भए ताजे फुलींका हार गलेमें धारण करे केसरकी आंगीरची भई दरशन दिया बहोत देशींके श्रीसंघ एकट्ठा भया था बड़ा चमत्कार देखनेमें आया था अब उस जगे पर नया मं० भ० का बना कर स्थापना करीहै तीर्थकी॥ यहांसे दूसरी रेलपर पालीजाना मी० १८ मा० ≡)

४० पाली ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के सहरमें। सहरके बाहर पहाड़पर वगैरा बहोतहै यहांसे जोधपुर जाना मी० २५ ।)॥

४१ लैनी जंक्शन ष्टेशनमें उतर कर दूसरी रेल जोधपुरवालीमें बैठना॥ यहांसे दो लैनहै जोधपुर जाना। मी० २० मा० ≡)।

४२ जोधपुर ष्टेशन उतरना सहरहै। ध० मं० भ० के अनेकहै यहां से खुसकी रस्ते जाना को० १६ सवारी सब मिलेहैं।

१—४२ ओसानगरी सहरहै ध० मं० भ० के प्राचीनहै श्रीआचार्य्य महाराजने वहांके राजाको सर्व प्रजा समेत उपदेश देकर जैनी कराथा वहांपर ओस बालवंशकी थापना करी वहांसे पीछा जोध-पुर आना॥ यहांसे रेलपर बैठकर मेरता जाना मी० ६४ मा० ॥≡)॥

४३ मेरता तथा फलौदी दोनों नामसे ष्टेशनहै शहर थोड़ी दूरहै।

१—४३ फलौदी सहरहै ध० मं० भ० केहैं तथा २३ में भ० श्रीफली-दौजीका तीर्थहै। यहांसे खुसकी रस्ते को० ४ मेरताहै सवारीमिलेहै

२—४३ मेरता सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे पीछे ष्टेशन जाना यहांसे रेलपर बैठकर नागौर जाना। मी० ३५ मा० ।≡)॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४४ नागौर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं॥ यहांसे रेल पर बैठकर वीकानेर जाना। मी० ६८ मा० ।⁄)।

४५ वीकानेर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के बहोतहै॥ यहां से पीछा लेनी आनके दूसरी रेलमें वालोतरे जाना मी० २८१ २॥।)॥

४६ वालोतरा ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे खुसकी रस्ते जाना सवारी मिलेहैं तथा रेल पंचभद्राको गईहै आगे
१—४६ यहांसे को० ३ श्रीनाकोडाजीका तीर्थहै २३ में भ० का मं० ध० है पीछे वालोतरे आना।
२—४६ यहांसे जैसलमेर सहर को० ५० है ध० मं० भ० के बहोत है ८ कीलेके भीतर ३ सहरके वाहर १ सहरमें बगीचेमें दादेजीका स्थानहै पुस्तकोंका प्राचीन भण्डारहै ऐसा कहीं नहींहै वजारमें चीत्रावेलहै जमीनके भीतर यहांसे खुसकी को०५ जाना सवारीजाहैं
३—४६ लोद्रुवागांवहै जिनस सब मिलेहैं ध० मं० २३ वें भ० का श्रीलोद्रुवाजीका तीर्थ प्रसिद्धहै यहांसे पीछे जैसलमेर आयकर वहांसे वालोतरे ष्टेशन जाना॥ यहांसे रेलपर बैठकर पीछा माडवाड जंक्शन पर आय कर रानी जाना। मी० १७८ मा० १॥।⁄)।

४७ रानी ष्टेशन उतरना वहांसे खुसकी रस्तेसे छोटी पञ्चतीर्थको रस्ताहै बेलगाड़ी जातीहै तथा यहांसे श्रीकेशरीयानाथजीकोबी।
१—४७ वरकानागांव को० २ है जिनिस सब मिलतीहै वहां ध० मं० २३ में भ० का वरकानेजी तीर्थ प्रसिद्धहै यहांसे नाडोल जाना
२—४७ नाडोलगांव को० २ है सब जिनिस मिलतीहै वहां ध० मं० भ० के नाडोलजी तीर्थ प्रसिद्धहै वहांसे रानकपुर जाना।
३—४७ रानकपुर ग्राम को० ३ है जिनिस सब मिलेहैं ध० मं०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भ० काहे वहां सब असवाव रख कर बैलगाड़ीमें जाना को० ३ पूजाका असवाव तथा भत्ताखानेको सीधा सामान वगैरा जरूरी सामान साथमें लेना जोखम गहना वगैरे विशेष नहीं लेजाना कारण बड़ा जंगलहै सबतरोंका भयहै सीपाई वगैरा वोलाउ साथमें उस गांवमेंसे भण्डारके मारफतसे जरूर लेना हथीयार समेत तथा दरशन पूजा करके पीछे चले आतेहैं लोग वा रातकोवी रहतेहैं श्रीसंघके समुदायसे यह इच्छाकी बात है कुछ दस्तुर नहींहै।

१ रांनपुरेजी तीर्थ को० ३ है ध० मं० भ० काहे ऐसी मांडनी मंदिर जीकी और कहीं नहीं है ८४ तो भवरातलघरा तीन तीन खनकाहै मं० भ० का तीन खनकाहै सब जगे चौमुखजी विराजमानहै खभा २००० लगेहैं करोड़ों रुपयेकी लागतका बड़ा भारी मंदिरजी बनाहै सब पत्थरका अपूर्व वहांसे पीछा आनकर सादरी जाना।

४—४७ सादरीग्राम को० ३ है जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० के संप्रति राजाके बनाये भएहैं अपूर्व वहांसे घानेराव जाना।

५—४७ घानेरावग्राम को० ५ है जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० काहे वहांसे बैलगाड़ीपर को० १ जंगलमें जाना होताहै सब असवाव यहां रखकर पूजाका सामान भत्ताखानेका वगैरा जरूरी असवाव साथमें लेकर जाना दर्शन पूजा करके चले आवना साथमें जापता बुलाउका भण्डारवालोंके मारफतसे हथीयार समेत जरूर लेना होता है रानपुरेजीके तरे समज लेना।

१ मुछाले २४ वें भ० का तीर्थ बड़ा चमत्कारीक प्रसिद्ध है ध० मं० भ० काहे यहांसे आन कर नाडुलाइ जाना।

६—४७ नाडुलाइग्राम को० २ है सब जिनिस मिलेहैं ध० मं० भ० के १३ है प्राचीन नाडुलाइ तीर्थ प्रसिद्धहै यहांसे रानी को० ३ है॥ वहांसे रानी ष्टेशन आयके नांना जाना। मी० २४ मा० ।)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४८ नांनां ष्टेशन उतरना खुसकी रस्ते को० २ बैलगाड़ी पर जाना १—४८ नांदीया ग्रामहै जिनिस सब मिलेहैं। ध० मं० भ० केहैं। २४ वें भ० की मूर्त्ती भगवानके विद्यमान रहते स्थापना भइथी इसे जीवतस्वामीका तीर्थ प्रसिद्ध है प्राचीन मंदिर भ० का है। यहांसे ष्टेशन पर जायकर रेलपर बैठके पींडवाडा जाना मी० १० मा०।)

---

४९ पींडवाडा ष्टेशन उतरना वहांसे गांव को० १ है ध० मं० भ० काहै जिनिस मिलेहैं सवारी बैलगाड़ीकी मिलेहैं वहां असबाब रखकर जापतावोलाडका गांवमेंसे हथीयारबंद लेकर जाना हो है पूजाका असबाव भत्ता सीधा वगैरा ले जाना वहां कुछ नहीं मिले हैं जंगलहै तथा दरशन पूजा करके चले आते हैं लोग रातको भी रहते हैं इच्छा मुजब कुछ दस्तुर नहीं है को० २ है।

१—४९ बंबनवाडजीका तीर्थ बड़ा प्राचीन चमत्कारी प्रभावीकहै ध० मं० २४ वें भगवानकाहै बालुकी मूर्त्ती विराजमानहै केसर कस्तूरी बहोत चढ़ती है मेला बरषमें १ होताहै बड़ा भारी।

२—४९ मंदिरजीके बाहर पहाड़के पास १ पेड़के नीचे १ गुंमटीमें २४वें भ० के चरणकी स्थापनाहै वहांपर २४वें भ० की कानसीला का काडीथी वह स्थानहै पहाड़ फट गया था। चींघारसे। तथा उसी जगे पर भ० को चंडकोसीये सर्पने डंक दियाथा ओभी स्थान बनाहै ऐसा वहांवाले कहतेहैं श्रीग्यानीमहाराज जानें क्या है।

३—४९ यहांसे सीरोही सहर खुसकी रस्ते को० ६ है वहां ध० मं० भ० के बहोतहै प्राचीन बड़ी लागतके यहांसे पीछा पींडवाड़े आना॥ यहांसे रेलपर बैठकर आबु जाना। मी० २८ मा० ।)

---

५० आबु ष्टेशनको खडडो जंक्शन ष्टेशन कहतेहैं उतरना बजारमें ध० है तीर्थ पहाड़ परहै असबाव जरूरी साथमें उपर लेजातेहै

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीर सब नीचे रख जातेहैं यहांसे को० २ पहाड़है सवारी सब तरहोंकी जायहै पहाड़पर सड़क बनीहै को० ७ की चढ़ाइहै आबु नाम सहर उपर वसेहैं सरकारी छावनीहै वहांसे को० १ उपर जाना पानी रस्तेमें मिलेहैं।

१—५० देवलवाड़ा ग्राममें आबुजीका तीर्थहै जिनिस सब मिलेहैं कारखाना भण्डारहै ध० है मं० भ० के कहै संगमरवर पत्थरके सपेद एकरंग तीसपर कोरनी नकासी इस कदर खोदीहै ऐसी कहीं नहीं है बडी कारीगरीका काम बनाहै लिखनेको असमर्थहै अरबों रूपएके लागतका मंदिर बना है देखने योग्य अपूर्व स्थानहै यहां इच्छा मुजब रहतेहै २।४ दिन वहांसे को० २ श्रीर ऊपर जाना

२—५० अचलगड ग्रामहै जिनिस मिलेहैं कारखाना भंडारहै रातको रहना हो है इच्छा मुजब वहां ध० मं० भ० काहै चौमुख-जीकी मूरते ४। १४४४ मन सोनेकीहै और १० मूरते बडी बडी सोनेकीहै अपूर्व ऐसी मूरते कहीं नहींहै प्राचीन ८ मूर्त्तें कावसग मुद्राकीहै २ पद्मासनकीहै। यहांसे पीछे नीचे धरमशालामें जाना।

३—५० वहांसे कुंवारीग्राम को० ७ खुशकी रस्ताहैं बैलगाड़ी जातीहै जिनिस सब मिलतीहै ध० मं० भ० के ५ हैं जिस पुण्य-वानने आबुजी पर मंदिर बनाएहैं उन्होंने यहवी मंदिर बड़े भारी बड़ी लागतके बनाएहै देखने योग्यहै यहांसे पीछे आबु आना यहांसे रेलपर बैठकर पालनपुर जाना। मी० ३२ मा० ।/)

५१ पालनपुर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं॥ यहांसे रेलपर बैठकर सिधपुर जाना। मी० १९ मा० ।)

५२ सिधपुर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं॥ यहांसे रेल पर बैठ कर महसाने जाना। मी० २१ मा० ।/)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

५३ महसांना जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं विद्याशालाहै यहांसे रेलकी वहोत लैन गईहै ॥ यहांसे पाटनकी रेलपर बैठ कर पाटन जाना। मी० ३० मा० ।≠)

५४ पाटन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के १५० है घरदेरासर १००० है पुस्तकोंका भण्डार प्राचीन जैसा यहांहै और जगे नहींहै उपासराहै जहांपर पुस्तके लिखी गइथी स्याहीके कुंडबनेहैं १—५४ पंचासरागांवसे २३ में भ० पंचासराजीकी मूरती कारण वस श्रीसंघने यहां लाय कर विराजमान करीहै सो तीर्थ पंचासराजी २३ में भ० का यहांहै मं० ध० है पाडली पंचासराग्राममें मंदिरजीहै उसमें मूरती और है संखेसराजी जाते रस्तमें गांव आताहै २—५४ यहांसे खुसकी रस्ते को० ३० संखेसरगांवहै सवारी बैलगाड़ी मिलेहैं जिनिस सब मिलेहैं वहां २३ में भ० संखेसराजीका तीर्थ प्रसिद्धहै ध० मं० भ० काहै वहांसे पाटन आना यहांसे को० २० राधनपुरहै खुसकी रस्ते ध० म० भ० के वहोतहै वहांसे मांडल खुसकी रस्तेहै घ० मं० भ० केहै ॥ यहांसे रेल पर पीछा महसाने जाकर दूसरी रेलमें बैठकर विसनगर जाना। मी० ४३ मा० ॥)॥

५५ विसनगर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे रेल पर बैठ कर वडनगर जाना। मी० ८ मा० ।)॥

५६ वडनगर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे रेल पर बैठ कर खैरालु जाना। मी० ७ मा० ।)।

५७ खेरालु ष्टेशन उतरना यहांसे को० ४ खुसकी रस्ते तारंगेजी जाना सवारी बैलगाड़ीको मिलेहैं गांवहै जिनिस सब मिलेहैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१—५७ तारंगेजी तीर्थहै नीचे गांवहै जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० काहै वहांसे मी० १ पहाड़पर तीर्थहै चढ़ाई थोड़ीहै को० १ की छोटा पहाड़है उपर जिनिस कुछ नहीं मिलेहैं रातको इच्छा होय तो रहतेहैं खुशी हो दर्शन करके चले आवो सवारी पहाड़पर कुछ जाती नहीं वा मिलती नहींहै वहां ध० कारखाना भण्डार मं० २ रे भ० का बड़ा उंचाहै अैसा उंचा मंदिर कहीं नहींहै अजर तगरकी बड़ी भारी सहतीरे शिखरमें लगीहै बड़ी लागतका मंदिरहै वीसाल यहांसे पीछा खैरालु जाना खैरालुसे पीछे महसाना जंक्शन ष्टेशन आकर दूसरी रेलमें दैतराज जाना मी० २३ मा० ।)।

५८ दैतराज ष्टेशन उतरना वहांसे को० २ खुसकी रस्ते जाना बैलगाड़ी पर गांवहै जिनिस मिलेहैं।

१—५८ भोयनीजी तीर्थहै ग्राममें ध० मं० १९ में भ० का बड़ा चमत्कारीकहै जमीनमेसे सुपना देकर मूरत प्रगट भइथी यहांसे पीछे ष्टेशन जाना॥ यहांसे वीरंमगांव जाना। मी० १८ मा० ॥)॥

५९ वीरंमगांव जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे रेल अहमदावादको गइहै बढ़मान जाना मी० ३९ मा० ।)।

६० बढ़वान ष्टेशन उतरना सहर को० १ है ध० मं० २३ में भ० कुरकुटेश्वरजीका तीर्थहै प्राचीन यहांसे नौमडीग्राम को० ४ है ध० मं० भ० केहैं सहरहै यहांसे सोनगढ़ जाना मी० ७२ मा० १।)

६१ धोला जंक्शन ष्टेशनसे रेलको दो लैनहै वहांसे सोनगढ़को रेलपर बैठके जाना। मी० १३ मा० ॥)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६२ सोनगढ़ ष्टेशन उतरना वहांसे गांव को० १ है ध० है यहांसे खुसकी रस्ते को० ६ पालीताने जाना बैलगाड़ी वगैरा सवारी मिलेहैं
१—६२ पालीतांना सहरहै ध० भीतर सहरके और वाहर बहोत है मं० भ० काहै भण्डार कारखाना वगैराहै वगीचेमें दादेजीका स्थानहै यहांसे श्रीसीद्वाचलजीका पहाड़ को० १ तलैटीहै पहाड़ की चढ़ाई को० ३ की बहोत सुगमहै रस्तेमें चढ़ते भए २३ में भ० कलकुंडजीके चरणकी थापनाहै हींगलाजके हाड़ेपै डोली की सवारी पहाड़पर जायहै रातको पहाड़पर रहनेका तथा खाने पीनेका वेहवार नहींहै असातना सब टालनी होयहै नहाने का वन्दोवस्त उपरवीहै पहाड़की बधायके पूजा करके उपर जाना
२—६२ तलेटीमें नया मंदिरजी अब बनाहै आगे नहींथा तथा ध० हैवहां यात्री लोगोंकी भत्तापानीकी भगती करतेहैं श्रीसंघकी तरफसे तलैटी तलक बैलगाड़ी जातीहै लोग जाय कर वहांसे डोलीपर बेठतेहैं बहुधा लोग धरमशालासे डोलीपै बैठकर जायहै पुण्यवान पैदल यात्रा करतेहैं १ वा २ जैसी सकती शरीरकी।
३—६२ श्रीसीद्वाचलजीके पहाड़ पर १ ले भ० का मं० मूलनायक जीकाहै उसे मूलवसही कहते हैं वहां फेरीमें रायनतले पगलाहै। १ ले भ० का मंदिरजीके सामने १ ले भ० के पहले गणधरका मं० है और अनेक मंदिर मूरते चरणोंकी स्थापनाहै हजारों धरमद्रुवारी है २२ वें भ० के विवाहकी चौरीहै अधिष्टाता। चक्रेस्वरी माताका स्थानहै सूर्य्यकुण्डहै जिसमें चंदराजा कुकडेसे मनुष भया था घेटी की पाज उलका झोल चेलन तलाइ। सीद्वसीला। सीद्ववड़ ! सवुजे नदी वगैरा स्थानहै फेरी तीन को० ३ को० ६ को० १२ पहाड़कीहै
४—६२ मोतीवसही अपूर्व बनीहै मं० भ०के बहोतहै अनेक मूर्त्तेहैं
५—६२ वहांसे और वसहीयोकी रस्ताहै नाम इस मुजब बसहीयोके साकरवसही नंदीश्वर दीप उजमवसही पेमा वसही छीपावसही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अद्भूतवावा पांचे पाडव १६ वें भ० का टुंक मरुदेवी माताका टुंक।
६—६२ खरतर वसहीमें चौमुखजी महाराजका मंदिर वीसालहै
और मं० बहोतसेहैं हजारों मूर्त्ते चरण विराजमानहै प्राचीन वसहीहै
७—६२ यह तीर्थ पहाड़ साश्वताहै ऐसी रचना दूसरी जगे नहीं
है हजारों मंदिरजी हजारों मूरते विराजमानहै चरणोंकी संख्या
नहींहै अनगिणति द्रव्य लगाहै बडी भारी सोभा महिमा तीर्थराज
कीहै चमत्कारीक एक एक कंकर पुजनीकहै लिखनेकी सकती नहीं
ग्रन्थ होजाय पर कोटेके वाहर आनेसे इंगारस्याह पीरकी स्थापनाहै
यह साधर्मीहै तीर्थकी रख्या करीथी औरंगजेव वादसाके अनरथके
बखतमें इसे स्थापनाहै श्रीसंघ भगती करेहैं दस्तुरहै यहांसे पीछे सहर
में आयके बैलगाड़ीपर जाना पालीतानेसे खुसकी रस्ते को० १२।
८—६२ महुवादाठा गांवहै जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० के
पहाड़परहै तीर्थ इसको वी कहतेहैं यहांसे पीछे पालीताने जाना।
यहांसे खुसकी रस्ते सोनगड जाकर सीहोर जाना मी० ५ मा० ⁄)

६३ सीहोर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं॥ यहांसे भाव
नगर रेलपर बैठकर जाना॥ मी० १३ मासूल ≠)

६४ भावनगर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे खुस
की रस्ते बैलगाड़ी पर जाना।
१—६४ घोघाबंदर जाना सहरहै ध० मं० २३ वें भ० नवखंडेजीका
तीर्थ प्राचीन प्रसिद्धहै पीछा भावनगर आके को० ८ जाना खुसकी
२—६४ तलाजा गांव जाना सहरहै ध० मं० भ० काहै पासमें १
पहाड़है तालध्वजगीरी उसपर मं० भ० काहै यहांसे को० २ जाना
३—६४ डाठा गांव जाना सहरहै ध० मं० १६ में भ० का प्राचीन
तीर्थहै यहांसे खुसकी रस्ते को० ८ जाना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४—६४ मवावंदर जाना सहरहै ध० १६वें भ० का मं० है वालुकी मूरती जीवतस्वामीकीहै प्राचीन तीर्थ इस नामसे प्रसिद्ध है यहांसे पीछे भावनगर जाना ॥ यहांसे रेलपर बैठकर धोला जंक्शन उतर के दूसरी रेलमें जैटलसर होते जुनागड जाना मी० ११० मा० १॥/)

६५ जैटलसर जंक्शत ष्टेशनसे दोय लैनहै जुनागढ़की रेलपर बैठके जाना मी० १६ मा० ।) यहांसे रेल वीरावल पटन गइहै ।

६६ जुनागड़ ष्टेशन उतरना सहर को० १ है ध० बहोतहै मं० भ०के भंडार कारखानाहै यहांसे तलैटी पहाडकी को०२ है सवारी मिलेहैं १—६६ तलैटीमें ध० मं० भ० काहै वहां यात्री लोगोंको भत्तापानी की भगती करतेहैं संघके तरफसे वहांसे पहाड़ पर जाना सवारी डोलीकी ऊपर जायहै पहाड़ पर सीडी बनीहै सारे को० ७ की चढ़ाईहै रस्तेमें पानी १।२ जगे मिलताहै ध० रस्तेमें बनीहै ।
२—६५ गीरनारजीका तीर्थ पहाड़पैहै को० ४ ऊपर जानेसे मं० २२वें भ० काहै और मंदिर बहोतहै पहाड़पर कल्या० ३ दि० ज्ञा० मो० भयेहै २२वें भ० के इस स्थानपै केवल ज्ञान भयाहै यहांसे ऊपर जाना। राजेमतीजीकी गुफाहै उपर थोड़ा जाना अधीष्टाता अम्बिकादेवीका मं० है वहांसे नीचेको उतरना होताहै आगे जाकर ३—६६ सहसावंनहै वहां गुमटीमें चरणोंकी स्थापनाहै भगवानने यहां दिक्षा लीथी वह स्थापनाहै यहांसे पीछा ऊपर जाना को०३
४—६६ पांचवे टुंक पर जाना वहां चरणकी स्थापनाहै भगवान यहां मोक्ष गयेहैं सो स्थापनाहै यहांसे नीचे आना वीचके मंदिरजी धरमशालामें और वी स्थान पहाड़पर बहोत वनेहैं योगी लोग रहतेहैं इस पहाड़में चित्रावेलहै तलावके भीतर पीछे सहरमें आना
५—६६ यहांसे रेल पोरवंदरको गईहै वहांसे खुसको रस्ते को० १४

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२३वें भ० वरेजाजीका तीर्थहै ध० मं० भ० काहै सवारी बैलगाडीकी जायहै जिनस मिलेहैं तथा खुसकी रस्ते वा जलमार्गसे कछभुज मांगरोल मांडवीबंदर जामनगर वगैरेको रस्ते हैं वहां मं० भ० के अनेक है ध० है यहांसे रेलपर बैठकर पीछा जैटलसर होते धोला जंक्शन आकर पीछा रेलपै बीरम गांव जंक्शन जाना वहांसे दूसरी रेलमें बैठकर अहमदाबादको जाना। मी० २४८ मा० ३।)

६७ अहमदाबाद जंक्शन ष्टेशन उतरना पासमें बजार ध० है सहर मी० १है वहां ध०मं०भ०के १२५है घरदेरासरजी ५००है माधोपुरे में बडा भारी मं० भ०का ध०है सहरसे को० १है और पुरोंमें मं० भ०केहैं विद्याशालाहै यहांसे खुसकी रस्ते को०३ बैलगाड़ीपैजाना १—६७ नारोडा गांवहै जिनिस मिलेहैं ध० मं० भ० के प्राचीन विसालहै वहांसे पीछे आना अहमदाबादके पास राजपुरमें मं० भ० केहैं॥ यहांसे रेलपर आनंद जाना। मील ४० मासूल।)

६८ आनंद ष्टेशन उतरना गांवहै बजारमें ध० है बैलगाडीकी सवारी मिलेहैं यहांसे खुसकी रस्ते को० १८ जाना।

१—६८ खंभायत सहरहै ध० मं० भ० के १०० है २३वें भ० का मं० श्रीथंभनाजीका तीर्थ बहोत प्राचीन प्रभावीकहै भगवानकी मूरती पन्नेरतनकी फणदार चमत्कारीकहै श्रीआचार्य्य महाराजने जयतिहुअण स्तोत्र नवीन रचना करके जमीनमेंसे मूरती प्रगट करीथी रामचन्द्रजीके बखतसे पता है इस तीर्थका आदि नहीं मालुमहै तीर्थकी स्थापना किसने करीथी इतना प्राचीन तीर्थहै खुलासे हाल तीर्थका शास्त्रोंसे जान लेना॥ यहांसे पीछा ष्टेशन पर आय कर रेलपर बैठके वडोदे जाना। मील ३२ मासूल।)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६८ वरोदा ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के १८ है यहांसे खुसकी रस्ते बैलगाड़ी पर कोस ८ जाना। मी० ४४ मा० ॥/)
१—६८ डवोही गांवहै जिनिसमिलेहैं ध० मं० २३ वें भ० लोडीजी का तीर्थ प्रसिद्धहै यहांसे पोछे वड़ौदे आना॥ रेलपर भरूवछ जाना

७० भरूवछ ष्टेशन उतरना सहर को० १ है ध० मं० भ० केहैं २० वें भ० का तीर्थ भगवानके नामसे प्रसिद्धहै मं० भ० का बिसाल बनाहै॥ यहांसे रेलपर बैठकर सुरत जाना। मी० ३७ मा० ।।)

७१ सुरत ष्टेशन उतरना सहर को० १ है गोपीपुरमें ध० मं० भ०के हैं और मं० १०० भ०के पुरे पुरे में हैं दादेजीका स्थान बड़ाचमत्कारीक है॥ यहांसे रेलपर बैठकर बंवई जाना। मी० १६७ मा० २≢)

७२ बंबई बंदर जंक्शन भाइखाला ष्टेशन उतरनावारकोट औकोला दोनो बसती जुदीहै ध० लालबाग में वगैरा बहोतहै मं० भ० के सहरमें कोलेमें कुलावे पर भाइखालेमें चौस बंदर पर बालकेस्वर वगैरेमें हैं वा विद्याशाला वा जैनएसोसीयन वा पांजरापोलहै तथा खुसकी रस्तेसे मिम अगासी वगैरामें मं०भ०के हैं यहांसे जलमार्गके रस्ते कलीकोट बंदरहै वहां कलीकुंडजी २३वें भ०का तीर्थ प्राचीन मं० है यहांसे रेलपर कल्याणी होते भुसावल जाना। मी० ३४ मा० ।≢)

७३ कल्यानी जंक्शन ष्टेशनसे रेल दखिनको पुना: सितरा अवला हैदरावाद चीनापटन मंदराज थाना: नासीक वगैरा वहोत जगे गइहै वहां ध० मं० भ० के प्राचीन अपूर्व बहोतहै पुस्तकमें विस्तार होजानेसे तथा वाकफ कारी वरावर नहीं मिलनेसे दखन बैराड खानदेस मालुवा वुंदेलखंड वघेलखंड वगैरा देश नगर गांवका हाल नहीं लिखाहै वीलकुल सो माफ करना साधर्मी भाइ लोग पुस्तक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

की वांचकर जहां जहां तीर्थ वगैरा रस्ता रेलका वा खुसकीका वगैरा सब विवस्था खुलासे अनुग्रह करके लिखेंगे तो दुवारा पुस्तक छपेगा उसमें वृद्धि होती जायगी जैसे जैसे जानपना मिलता जायगा स्थानोंका वा हैदराबादसे खुसकी रस्ते कुलपाकजी मानक स्वामीका तीर्थ बड़ा चमत्कारीहै वा मंदराजके जौलेमें जैन कांचीमें रत्नोंकी मूर्त्ती अनेकहै ॥ यहांसे रेलपर जाना। मी० २४२ मा० ३‌॥)

---

७४ भूसावल जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध०है यहांसे रेल नागपुरको गइहै॥ उस रेलपर बैठके आकोला जाना मी० ८७ मा०१‌॥)

---

७५ आकोला ष्टेशन उतरना गांवहै जिनिस मिलेहैं ध० है यहांसे खुसकी रस्ते को० १८ बैलगाड़ी पर जाना।

१—७५ सीरपुर नगर ग्रामहै वहां ध० है २३ वें भ० का मं० अंतरीक्षजीका तीर्थहै बहोत प्रभावीक प्राचीन तलावमेंसे सुपना देकर मूरत प्रगट भइथी वालुकी बड़ी अवगाहनाकी मूर्त्तीहै जमीनसे अधर विराजमानहैं आगे भाले समेत घोड़े सवार नीकल जायथा कालके दोषसे अब पद्मासंनके नीचेसे अंग लोना नीकलताहै इसकी आद मालुम नहींहै कीस पुण्यवानने स्थापना करीथी मूरतकी विशेष हाल तीर्थका शास्त्रसे जानना यहांसे पीछे ष्टेशन जाना ॥ यहांसे रेलपर बैठकर नागपुर जाना। मील १५७ मासूल २)

---

७६ नागपुर जंक्शन ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० केहैं यहांसे रेलकी कैलेनहै ॥ यहांसे रेलपर रायपुर जाना मी०१८० मा०२।)॥

---

७७ रायपुर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ०के हैं ॥ यहांसे रेल पर बैठकर पीछा भूसावल जंक्शन आय कर दूसरी रेलमें बैठकर बरांनपुर जाना। मील २८४ मासूल ३॥‌)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

७८ वरानपुर ष्टेशन उतरना सहर को० २ है ध० मं० भ०के १८ है १—७८ यहां २३वें भ०का मं० मनमोहनजीका तीर्थ प्राचीन चमत्कारीहै और काष्टका पहाड़ श्रीसंमेतशिखरजीका बड़ा मनोहर यन्त्र संयुक्त चमत्कारीक बनाहै यहांसे रेलपर खंडुवे जाना मी० ३६मा०॥/)

७९ खंडुवा जंक्शन ष्टेशनमें उतरना वहांसे बहोत रेलकी लैनहै यहांसे दूसरी रेलमें बैठकर इन्दौर जाना। मील ८६ मासूल ॥≡)

८० इन्दौर ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के सराफे बजारमें हैं यहांसे खुसकी रस्ते को० ४० जाना सवारी सब जाती है।
१—८० धार सहरहै ध० मं० भ० के हैं सोनेकी मूर्त्ती बडी मूलनायकजीकीहै और स्थान प्राचीन वादसाही वखतके बहोत बनेहैं यहांसे खुसकी को० १२ जाना सवारी बैलगाड़ी वगैरा जाहै।
२—८० मांडीगढ़का पहाड़है तीन बले करके खाइ समेत कीले मुजब घेराहै उस खाइमें घीत्रावेलहै उपर बसती बजारहै जिनस मिलेहैं वहां भैसा साहका बनाया मं० १ गुंमजका बड़े विस्तारमेंहैं १६ वें भ० की मूर्त्ती सोनेकी बड़ी मूलनायकजीकीहै अनेक स्थान वादसाही बहोत लागतके बनेहैं यहांसे पीछे उसी रस्ते धार आके इन्दौर जाना॥ यहांसे रेलपर फतहाबाद जाना मी० २५ मा०।)

८१ फतहावाद जंक्शन ष्टेशन उतरकर दूसरी रेलमें बैठकर उज्जैन जाना। मील १४ मासूल ≡)

८२ उज्जैन ष्टेशन उतरना सहरहैप्राचीन स्थान पहाड़ों पर वा सहर में बहोतहै शास्त्रमें इसको ऐवंतीका नगरी कहाहै ध० मं० भ०केहैं १—८२ यहां ऐवंतीजीका तीर्थ २३ वें भ० का मं० है श्रीआचार्य्य महाराजने जमीनमेंसे कल्याण मंदिर स्तोत्र नवीन रचना करके प्रगट करीथी मूर्त्ती विक्रमादीत्यको १८ राजा समेत प्रतिवोध देने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को चमत्कार दिखाकर जैनी कराथा प्राचीन तीर्थ चमत्कारीकहै यहांसे खुसकी को० १२ जापता लेके जाना सवारी सब मिलेहैं।

२—८२ मगसी ग्रामहै वहां २३ वें भ० मगसीजीका तीर्थ मं० प्राचीन चमत्कारीकहै जिनस सब मिलेहैं। यहां पर संवत् १९१६ के अषाढ़में सरदारमलजीको सुपना देकर २३ वें भ० श्रीगोडीजी महाराज प्रगटेथे जमीनमेंसे ११ दिनतक दरशन दिया पानी १ बुंद बरसा नहींथा अनेक चमत्कार आनंद भयेथे ३ लाख यात्री इकट्ठा भयाथा बड़ा भारी मेला हुवाथा उस स्थानपर मं० भ०का नया बना कर स्थापना करीहै तीर्थको यहांसे पीछे उज्जैन जाना॥ यहांसे रेलपर फताहाबाद आके दूसरी रेलमें रतलाम जाना मी०४९ ॥≶)

---

८३ रतलाम ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ०का चौक बजारमेंहैं यहांसे खुसकी रस्तेसे जाना सवारी सब मिलेहैं।

१—८३ खाचरौद सहरहै ध० मं० भ० के हैं यहांसे रतलाम आना

२—८३ बबरोदगांव को० २ है जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० केसरीयाजीकाहै यहांसे पीछे रतलाम आयके फेर जाना।

३—८३ सेमलाग्राम को० ४ है जिनिस सब मिलेहैं ध० मं० भ० काहै और १६ वें भ०का मं० उड़ाकर यहां लायेथे उसका चमत्कार यहहै खंभे मेंसे दुधकी धारा भादो सुदी २ को निकलती है यहांसे पीछे रतलाम जाना॥ यहांसे नीमच जाना। मी० ८३ मा० ॥≶)

८४ नीमच ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के प्राचीनहै॥ यहां से रेलपर बैठकर नींभार जाना। मी० १६ मा० ≶)

---

८५ नींभार ष्टेशन उतरना सहरहै ध० म० भ० के हैं यहांसे भी खुसकी रस्ता उदेपुरकोहै सवारी सब जायहै॥ यहांसे रेल पर बैठ कर चीतौड़गढ़ जाना। मी० १८ मा० ≶)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८६ चीतौड़गढ़ ष्टेशन उतरना सहरहै ध० मं० भ० के हैं को० १ कोलाहै उसमें मं० भ० के हैं यहांसे खुसकी रस्ते को० ३५ उदेपुर जाना सवारी सब मिलतीहै जापताबोलाउका साथमें लेना।

१—८६ उदेपुर सहरहै ध० मं० भ० के कै हैं यहांसे खुसकी रस्ते से जाना सवारी सब मिलेहैं को० १६ जंगलपहाड़का रस्ताहै जापताबुलाउका साथमें लेनाहोहै जिनिस रस्तेमें नहीं मिलेहैं।

२—८६ धुलेवागांवहै जिनिस सब मिलेहैं सहर मुजब ध० मं० १ ले भ० श्रीकेशरीयानाथजीका तीर्थ प्राचीन बड़ा चमत्कारीकहै मनोबंधकेशर रोज चढ़तीहै कृतीस जात बाबाको पूजतीहै आज्ञा मानेहैं

३—८६ यहांसे को० ५ पहाड़ पर मं० २३ वें भ० श्रीसांवराजीका तीर्थहै वहांसे पीछे आना॥ यहांसे पीछा उदेपुर होते चीतौड़गढ़ आयके रेलपर बैठकर अजमेर जाना। मी० ११६ मा० १६)

अजमेर जंकशनसे आगरे होके कलकत्ते आवना मी० १०७३ १३।६)

८७ श्रीअष्टापदजी तीर्थ उत्तर दिशामेंहैं अपूर्व तीर्थहै बिना लबधी के तथा देववल विद्याके साहज बिना फसरना उदे नहीं आसकती है चारों तरफमें विस्तारसे गङ्गा वहतीहै बीचमें पहाड़ है बहोत उंचा १ एक जोजनके आंतरेसे सीड़ी ८ है श्री सोनेका शिखरबंद बहोत उंचा मं० है उसमें रत्नोंकी मूरते २४बि सों भगवानकी अपनी काया प्रमाणे विराजमानहै वहां १ले भ० का कल्या० १ मो० भयाहै

॥ तीर्थोंका वर्त्तमान व्यवस्था जो जो तीर्थ विच्छेद है ॥

१ श्रीभद्दलपुरजीका तीर्थ छोटेसे पहाड़पर १ मंदिर बनाहै प्राचीन पहले उसमें भ० की मूरती विराजमानथी थोड़े वरस भये कोइ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पादड़ी साहेबने लावारस स्थान जानकर मूरती उठाके ले गये मगर १ पत्थरमें पालीहर्फ प्राचीन लिपी में बहोतसा लिखा हुया लगाहै उन हरफोंको कोई पढ़ सकता नहीं क्या लिखाहै जगे बड़ी रमणीकहै पहाड़के नीचे १ मं० देवीकाहै नदी वहतीहै गांव वस्ताहै जिनिस मिलतीहै रस्ता गयाजीतक रेलहै बांकीपुर ष्टेशनसे वहांसे को० १० सहरघाटी तक खुसकी सडकका रस्ताहै वहां तक सवारी जायहै वहांसे को० ४ हंडरगंजहै वहांसे को० १ हटवरीया गांव पूर्वहै इतना रस्ता पगडण्डीकाहै बैलगाड़ी जातीहै जिस जमीदारका गांव पहाड़ वगैराहै वह कलकत्तेमें रहतेहैं हकीमजी की गली नंबर १० में बड़े रहीस मदनमोहनजी भट्ट है उनसे श्रीसंघसे परचे प्रीति बहोतहै वह तीर्थ प्रगट करनेको स्थान देनेको मौजुदहै श्रीसंघको वह गांव उनके भाइके पासमेंहै उद्यम करनेसे मील सकताहै वहां १० वें भ० के कल्या० ४ भएहैं क्षेत्र फरसनाहै।

---

२ श्रीमिथिला नगरीके तीर्थमें १ प्राचीन गुमटी बनीथी उसमें दोनों भगवानके चरन १ स्याम कसौटी पत्थरमें बहोत मनोहर बने भए विराजमानथे प्रतिष्ठा सत्पुरुषोंकी करी भइहै चरनोंमें लिखाहै प्राचीन चरण जीर्ण बहोत होगएथे सो भण्डार करके संवत् १८०० के में जीरन उधार श्रीसंघने कराया‌है तथा मिथिलाजी अब सिता-मड़ीके नामसे प्रसिद्धहै वहांसे मुदफरपुर सहर पास पडताहै वहां पटने सहरके श्रावक लोगोंको दुकानथी इसे आना जाना हमेशा रहताथा तब तक स्थान कायमथा अन्यमती लोगोंका तीर्थहै वहां मगर डरतेथे जबसे दुकाने उठ गई आना जाना रहा नहीं बहोत दिन बाद अन्यमतीयोंने अपना दखल गुमटीमें कर लिया चरणों पर कपड़ा बिछाकर अपनी मूरती रखकर यात्रियोंसे पूजा कराते कोई पुण्यवान समेपाय वहां गया तीर्थ करनेको उंन लोगों से दरी-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

याफत करा अपना स्थान तो उन लोगोंने अपना आडंवर उठा लिया स्थान बताकर पूजा लिया जब यात्री चला गया फेर अपना ढांचा लगा लिया बहोत दिन तक यो हीं चला कोई श्रीसंघने ख्याल नहीं करा दिन बहोत वीत गये उन लोगोंने बिचारा कोई वारस खबर लेता नहींहे तो इनका नाम निसान उठा दो अपना कर लो ठिकाना कालके दोषसे दुष्टबुद्धियोंने ऐसा बिचार कर चरणोंको गुमटीमेंसे उखाड़ गेरे डर रहा नहीं जब आना जानाथा तब डरथा चरण कहीं गाड़ दिये इतना अनुग्रहकराके अनर्थ नहीं कराथा गुमटीमें दखल करके अपना मंदर कर लिया उस स्थान पर अपना कुछ नाम निसान रहा नहीं बहोत दिन बाद लखनउसे कोई पुण्यवान तौर्थ करनेको गएथे बहोत तलास करा पता लगा नहीं जड़ तो रही नहीं पता मिले कहांसे वह श्रावक बुद्धिवानथे इन लोगोंकी बातोंमें समझ गये इन लोगोंने लावारस जगे समझ कर अनर्थ करगेराहे स्थान अपना कर लिया तब बुद्धिवानने बुद्धिबलसें द्रव्यका लालच दिया हमे जगेसे मतलब नहींहे यहां जो चरणथे वह मिल जाय तो द्रव्य देंगे ग्रामके रहनेवाले ब्राह्मणथे द्रव्यके लालचमें आके चरण लायके हाजिर करे पुण्यवानने चरण लेकर भागलपुरमें चंपापुरजीकी यात्राको आए वहां धनपतसिंघजीसे मुलाकात हो गइ हाल सब कहा कुछ वन्दोवस्त करा नहीं सुनकर चरण लेलीये बहोत वेजा करा उस बखत उद्यम करते जोर देते तो स्थान हाथ आजाता इन्होंने भागलपुरके अपने मंदिरजीमें वेदीजीके नीचे सीडीकी जगे स्थापनाकर दियाथा अजान आदमी चरण नहीं समझेगा वेदीपर चड़नेकी सीड़ी समझकर पैर रखदेगा तथा पूजारी वेदी झाड़ता पूजाके बखत तो सब कतुवार चरणों पर गिरता ऐसी असातना देखि मय जात्रा करने गयाथा तब बहोत जबरदस्तीसे मंदिरजीके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१ कोनेमें गुंमटीके भीतर उचित स्थानपर विराजमान कर दियेथे सो भागलपुरके मंदिरजीमें विराजमानहै चरण मिथिलाजी तीर्थके खास तथा मिथलाजीमें राजाका राज्यहै प्राचीन स्थान हाथ आना कठिनहै बहोत वरस गुजर गये उस वखत उद्यम करते धनपतसिंघजी तो गुंमटी मिल जातो अव नवीन जमीन लेकर श्रींसंघ तीर्थ प्रगट करे उद्यम करके तो हो सकताहै और उपाय नहीं है रस्ता रेलका है मुकामा ष्टेशनसे गङ्गा पार जाकर सीतामडीको रेलहै दरभंगे होकर यहां कल्या० ८ दो भ० के भयेहैं।

---

३ श्रीपुरमतालनगर तीर्थमें बहोत बरसोंसे ऐसाही चला आताहै प्रयागजीके कीलेके भीतर तलघरेमें १ तरफ अक्षयबडहै उसको अन्यमती लोग आपना तीर्थ मानतेहैं पूजतेहैं उसके पास दलानमें १ मूर्त्ती पाषाणकीहै उसे डिगांवरी लोग पूजतेहैं उसके पासमें चरण है पाषाणके उसको लोगोंके कहने मुजव सीतंवरी लोग पूजतेहैं उस चरणों पर कुछ लिखा नहींहै हरफ तथा लंछन वी नहींहै श्रीग्यानी भगवान जाने क्याहै चरन जैनके हैं वा औरके हैं निश्चमें क्षेत्र फरसना होती है सो लोग करते हैं तथा सहरसे को० ३ पै मुठीगंजहै सडकपर खुसकी रस्तेके ध० मं० सीखरवंद १ पुण्यवान ने तीर्थ प्रगट करनेको बनाया था जब रेल नहींथी खुसकी रस्ता था सो मौके पर बनायाथा कालके दोषसे उपद्रवके सववसे प्रतिष्ठा जी नहीं होने पाइ ५० वरस होगए मं० खड़ाहै इसको खेवट श्रीसंघ करता नहींहै गवरमेंटसे दरखास्त करके अपनी जगे दखल अभीतक दिखाकर स्थापनाका हुकम करा ले तो हो सकताहै जब काल और वरतेथा अब राजधानी सरकारमें व्यवहार रीति और वरतेहैं अपने अपने धर्मको इसे उमेद होतीहै उद्यम बड़ा पदार्थहै मगर किसे गरज धर्मरागहै सो खेवट करे रस्ता रेलकाहै इलाहावाद ष्टेशन तक वहांसे को० १ है यहां १ले भ० का कल्या० १ भयाहै।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४ कौसंबी नगरी तीर्थमें पहाड़पर डिगम्बरियोंका मं० है नीचे ध० बगीचाहै जंगलहै उस मं० में १ चरण विराजमान थे अपने और कुछ स्थान नहींथा जो यात्री जाते सो चरणोंकी पूजा सेवा करते मं० के पासमें छोटासा पहाड़ है उसकी पूजा करते खेत्र फरसना करके कभी कभी घोली भइ केसरके छींटे वरस्ते हैं यह चमत्कार तीर्थका है वरसमें १ मेला डिगम्बरी लोगोंका होताहै कालके दोषसे १ पागल मनुष्यने मं० में जायकर बड़े अनर्थ करेथे सो अपने चरणको वी खण्डीतकरगेरे पूजने योग्य नहीं रहे श्रीसंघने कुछ खेवटकरी नहीं खेत्र फरसना अवहै वहां राजाका राज्यहै पर डिगम्बरी लोग राजीहै श्रीसंघ कुछ इरादा करे तीर्थ प्रगट करनेका तो होसकताहै प्रयागजी में मंदर डिगम्बरियोंकाहै उनके तालुकहै तीर्थ रस्ता प्रयागजीसे को० १८ खुसकी सड़ककाहै पपोसा गांवके नामसे प्रसिद्धहै वहां ६ ठे भ० के कल्या० ४ भए हैं।

---

५ सावथी नगरी तीर्थमें खेटमेटके बडे कोलेके भीतर १ शिखरबंद मंदिर अभीतक है थोड़े वरस पहले उसमें मूर्त्ती ३ रे भ० की विराजमानथी मूर्त्तीका आकार दिवालमें पचीथी सो चुनेमें बनाहै वरस २० भए होगे १ पादरी साहिवने जगे बड़ी रमणीक चमत्कारीक देखकर कालके दोषसे उनको सन्देह भया यहां द्रव्य जरूरहै जङ्गलमें ऐसा रमणीयक स्थान उद्योत करताहै ऐसे लोभ वश होकर मूर्त्तीको उठाकर मूलगंभरा खुदाया कुंवेके तरीं नीचे से मूर्त्ते ३ निकली श्रीग्यानी महाराज जाने पहलेकी खण्डीतथी के खोदनेमें खण्डीत होगई धन तो निकला नहीं बाद उसी मुजब खाडा भरवा दिया मूर्त्तियोंको लेगये श्रीसंघने कुछ खेवट करी नहीं उद्यम करते तो मूर्त्ती पीछी मील जाती दस्तुरहै लखनऊ सहर वहांसे पासहै अब खेत्र फरसना है १ मीलमें कोला पक्का बनाहै

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिवाल गिरपड़ीहै तलाव के हैं वा कुंवे मीठे जलके बहोतहै पक्के बने भए उत्तम मेवादिक फुलके वृक्ष लगेहैं नीचे नदी वहतीहै जंगलहै इंटा मसाला वगैरा बहोत पड़ाहै चोरवी वस्तु गड़ी भई नीकले तो ताज्जुव नहींहै भाग्यवलसे वह जगे दिव्वर करतीहै वहांसे थोड़ी दूरपै १ छोटी गढी और है महाराजे बलरामपुरका राज्यहै राज-धानीसे को० ५ जंगलमें खेटमेटका कीला प्रसिद्धहै अब रानी साहव मालीकहै सरकारसे कोटा फाडीसका वन्दोवस्तहै खेवट करनेसे जगे मील सकतीहै राजासाहेव पुण्यवानने तो हर १ जौहरी लोगोंसि बहोत कहाथा तुम्हारा तीर्थहै बनावो मेला करा करो हम जगे यौंही देतेहैं वा जगात वगैरा माफकरदेंगे आप लोग रहीसोंका आना जाना राजधानीमें इस सबवसे हमेसा रहेगा इसे मगर कोई साहिबने ख्याल करा नहीं वड़ा अफसोसहै लिखते बनता नहीं कुछ रस्ता फैजावाद तक रेलहै वहांसे को० ३० गोंड होकर खुसकी सड़कहै बरावर यहां ३ रे भ० के कल्या० ४ भए हैं

---

६ श्रीसोरीपुर नगर तीर्थको वटेश्वर नामसे प्रसिद्धहै को० १ यमुना जीके बीहड में प्राचीन चरणकी स्थापनाथी पहले उसके पासमें खसकरके श्रीसंघने १ गुमटी बनाकर संगमरवरकी वेदी में १ चरण बहोत मनोहर बने भए को स्थापना करीथी १ आलेमें अधिष्ठाता की मूर्त्ती संगमरवरकी मनोहर थापी वाद थोड़े बरसोंके भूलगए तीर्थ कहांहै पूजा सेवा होतीहै के नहीं कौन करता होगा जरा ख्याल रखा नहीं वहांसे को० १८ लसकर वा आगरा सहरहै दोनों सहरोंके श्रीसंघ धरमके रागी समुदायहै तोसपरभी अपने करे भए को भुल भए कैसा धरमराग श्रीसंघकाहै कुछ लिखते बनता नहींहै ताज्जुव होताहै मनमें जंगलमें गैया चराने ग्वालीये जातेहैं उत्तम स्थान देखकर उसमें बैठते खेलतेहैं वेदीपर चढ़कर उस कारणसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चरण कि कवलोंकी पंखड़ी खंडीतकरदीहै अधिष्ठाताकी मूर्त्ती बिलकुल खंडीत करदीहै कोई धनी नहीं वहां जिसका डर माने इच्छा मुजब खेल करतेहैं सहरमें डिगम्बरियोंका मंदिरहै अन्य-मतियोंका तीर्थहै मेला १ सालके साल होताहै अपना कुछ नहींहै वहां १ मकान बना भया पक्का धनपतसिंघजी ने तीन हजारमें लिया था मंदिरजी बनानेको बरस २० भए होगे मंदिर वगैरा कुछ बनाया नहीं मकान गिरकर मैदान होगयाहै जमीन अब सौवरूपएको वि कतीहै इस ईरादेको गौर करना मुनासिवहै कैसा धरमराग लोगों का रह गयाहै राजा भदावरका राज्यहै यमुना नीचे वहतीहै रस्ता सकुरावाद तक रेलहै वहांसे को० ६ खुसकी बैलगाड़ीपर सौरीपुर बटेश्वर इस नामसे प्रसिद्धहै यहां २२ वें भ० के कल्या० २ भए हैं।

७ श्रीअष्टापदजीका तीर्थ उत्तर दिशामेंहैं पता नहीं मौलता कहां है मगर भूगोल हस्तामलकके किताबमें ऐसा लिखाहै के उत्तराद मीठा समुद्रहै उसके बीचमें १ पहाड़है उसपर १ मंदिर सोने ऐसा चमकता दिखाई देताहै उसको जैनी लोग अष्टापदका तीर्थ कहते हैं ऐसा लिखा देखा पर उस लिखने पर बिलकुल सरदहना नहीं करतेहैं शास्त्रके लिखनेको सुनकर वहां बड़े बिस्तारसे गंगा पहाड़ के चारों तरफ घुमतीहै नेत्रों को ईती सकती नहींहै जो इतने दूरका पदार्थ देख सके वा दूरवींनके सीसेको वी इता बल नहींहै उसके सहाजसे देखनेमें आवे सैकड़ो कोसकी वस्तु तथा इस भरत में मीठा समुद्र वो नहींहै ऐसे २ अनुमानसे उस लिखनेको सही नहीं समझ सकतेहैं (कयासी बातको) और तीर्थोंकी फरसना जो बीछेदहै तीवी खेत्र आसरी होतीहै सरीर करके इस तीर्थको फर-सना तो भाव के सेवाय और कोईतरोंसे नहीं होसकतीहै यह तीर्थ विछेद नहींहै विद्यमानहै मं० भ० के वगैराहै फरसना होना कठन है तो विछेदसे विशेषहै १ ले भ० का कल्या० १ मो० भयाहै वहां

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ जीर्णोद्धार की व्यवस्था ॥

१ वनारस नगरीमें श्रीभद्दयनीजीका तीर्थ ७ वें भगवान के कल्याणकका स्थानहै राजा वछराजजीका बनाया भया गंगाजीके तटपै पकाघाट शिखरबंद मन्दिर धर्म्मशाला लाखों रुपयेकी लागतकी इमारत बनीहै अब कालके दोषसे गंगाने काट करना सुरु कराहै आधा घाट काट कर लेगईहै बड़ा अनर्थ भयाहै इसका जीर्ण उद्धार वगैरा बहौत जलदी बन्दोवस्त श्रीसंघको करना मुनासिवहै जीसे तीर्थ रह जाय अगर नहीं बन्दोवस्त होगा कुछ तो थोड़े वरसोंमें तीर्थ विछेद होजायगा गङ्गा सब लेजायगी फिर पछतावा होगा अभी तो थोड़े द्रव्यके खरचसें बन्दोवस्त हो सकताहै श्रीसंघ बिलकुल ख्याल करता नहींहै निश्चिन्तहै इसे समस्त श्रीसंघसे बिनतीहै संघ सामर्थहै सर्वकार्य्य करनेको सो उद्दम होना उचित है और तीर्थ भी बहौत जीर्ण होगयेहैं पर १ वरस बाद भी जीर्ण उद्धार होनेसे इतना नुकसान नहीं मालूम होताहै इस तीर्थका जीतनी देरीसे बन्दोवस्त होगा उतना नुकसान दिन दिन बड़ता जायगा खरच वगैरेका इस बातको खूब गौर करे धरम रागसें।

और लोग नाम करमके भांगिसे जहांपर अनेक मंदिरजी बनेहैं वहांपर और नये मंदिर वनवातेहैं परन्तु जो तीर्थ वीछेदहै वा तीर्थ. प्राचीन वने भए जीर्ण होगएहैं स्थान अत्यन्त उसका जीर्ण उद्धार वगैरा नहीं करातेहैं पुण्यवानोंने तो लाखो रुपए खरच करके तीर्थ प्रगट करे स्थान बनाये थे अबके श्रीसंघसे उसकी साधवनीसार संभार तक नहीं हो सकतीहै भगवान्की पूजा सेवा वगैरा होतीहैके नहीं होतीहै बड़े आश्चर्यकी वातहै कैसा धरम राग श्रावकोंका होता जायहै कालके दोषसे देवगुरु धरमकी भगती कम होती जायहै जैसा ख्याल चिन्ता चितमेंहैं कोइ उपाय चलता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नहीं कहाहै। (सुतेको जगाइये। जागतेको कहा जगावनोहै) ज्यादा क्या अरज करे तीर्थोंका प्रगट करनेका जीर्ण उद्धारादीकका वंदोवस्त करना श्रीसंघ समस्तको बहोत जल्दी उचितहै थोड़े द्रव्यका खरचहै लाखो रुपएकी लागतके स्थान बनेहैं अभी सेकड़ों रुपए खरचनेसें मरम्मत होजानेसे बहोत कालतक बने रहैगें जीर्ण उद्धार नहों होनेसे कुछकालमें गौर जायगे तो नए बनने बड़े कठिनहै इस बातको दीर्घ दृष्टि देकर खूब गौर करना उचीतहै

॥ विज्ञापन ॥

॥ यह पुस्तक जिसको मगानेकी इच्छा होय सो कीमत भेजकर डांकमासूल समेत जीतो दरकार होय १ से लगाय १००० तक हमेसा मिलेगी छपी भइ तयार रहतीहै इस ठिकानेसे बाबू माधोलालजी दुगड़ जवहरीके कोठीमें नंवर ४१ बड़तला ईष्ट्रीट कलकत्ते में तथा मगानेवाले साधर्मी भाई अपना ठीकाना नाम जीला सहर वगैरेका खुलासे लिखेगें जिसमें ठिकानेसे पुगजावे।

और खुलासे हाल विस्तारसे इस पुस्तकमें लिखाहै ठिकाने ठिकाने जो जो तीर्थ विद्यमानहै वा नहों विद्यमानहै वगैरा वर्त्तमान हाल पुस्तक सव पढ़नेसे समझनेमें आवेगा कर कंकनवत् सुगमतासे।

और पुस्तकके अन्तमें लिखाहै जो जो तीर्थ वीछेदहै वा कल्यानक भूमो उसका हाल खुलासे उसपर उपगार वा धर्म का उद्योत वा लाभकी दृष्टी देकर समस्त श्रीसंघको विचार करना मुनासिवहै श्रीसंघका घर बड़ा भारीहै ऐसे ऐसे तीर्थ वीछेदहै तो अवश्य श्री-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संघको उद्यम करके तीर्थ प्रगट करना उचितहै उसे धर्मका उद्योत पुण्यका बंध यश लाभ उपगार होगा श्रीसंघ सेवाय कौन समर्थ है।

और थोड़े थोड़े द्रव्यके खरचनेसे तीर्थ स्थान बन सकतेहैं बहोत खरचेका काम नहींहै अनंत कल्यानी श्रीसंघहै मेरी विनती सुनेगे जरूर धरमरागको नजर देकर एकसे एक पुण्यवान् संघमें है वर्त्तमानमें अबभी लाखों रुपये खरच करतेहै धरमकार्य्यमे नवीन जिन मंदिर वगैरामें तो यह काम तो सर्वसे उत्कृष्टाहै करने योग्य।

और जो सहर ग्रामसे तीर्थयात्रा करनेको श्रावक लोग उद्यत होंय उस जगेसे दिसाका सुमार करके पूर्व पश्चिम का रेलवे के टैम टोवलमें डौन अप देखकर रस्ता इस पुस्तकमें समझ लेगे कौधरसे कौन कौन तीर्थ आवेंगे रस्ता सोधा पड़ेगा तीर्थ सर्वको फरसना होगी कारण इस पुस्तकमें क्रम पूर्वसे प्रारम्भ कराहै पश्चिम जाने को उस मुजब तीर्थोंका नाम रस्तेका लिखाहै सोधा घुमनेको।

पूर्वमें कलकत्तेसे लगाय दिल्ली पंजाबतक रेलके ष्टेशनो पर वा खुसकी रस्तोंमें वा सहरोंमें धर्मशालाका चलन बहोत कमहै हमेसां से सरांयका चलन बहोतहै सरांये जगे जगे हैं ष्टेशनोंपर खुसकी रस्तेमें सहरोंमें सब जगे बनीहै मुसाफिर लोग उसमें उतरतेहैं भाड़ा देकर धरमशालाका चलन बन्दोबस्त अब होता जाताहै जगे२ और अवधके जीलेमें वा माड़वाड़ आबुके जीलेमें रातको ष्टेशनो परसे सहरमें ग्राममें जाना नहीं हरतरोका डर भय रहताहै रात को रस्तेमे जङ्गल वगैरा पड़ताहै सवारी भी नहीं मीलतीहै कहीं२ इस कारणसे ष्टेशनो पर रातको रहतेहैं दिनको सहरमे जांयहैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ विनती पत्र ॥

॥ समस्त श्रीसंघसे अरजहै मैंने अपनी बुद्धि अनुसार जहांतक जानकारथी वा तलास करनेसे पता पाया वहांतक इस पुस्तकमें वा नक्शेमें लिखाहै इसमें कुछ फरक वा भूल वा अशुद्धता होय तो क्षमा करना माफ कराताहूं वाचनेवाले वा जानकार लोग सुधकर देंगे।

॥ यह पुस्तक याची लोगोंको सूर्य्यवत् प्रकाश करनेवाली है साधर्मी भाईलोग अनुग्रह करके इस पुस्तकको खरीदकर अपने पास यत्नसें रखेंगे उसे बड़ा लाभ उपगार होगा कारण साधर्मी भाईलोग बड़े उत्साह सें तीर्थयात्रा करने आतेहैं परन्तु सर्व तर्थों की फरसना उदे नहीं आती अजानपनेसे जो बड़े२ तीर्थ प्रसिद्धहै उनकी यात्रा करके पीछे चले जातेहैं इस बातका चित्तमें बड़ा खेद होताहै महापुण्यके उदेसे अन्तराय टुटने पर धर्मकार्य्य तीर्थ यात्रा दिक उदे आतीहैं सो संपूर्ण कल्याणक भूमी वगैरे तीर्थकी फरसना नहीं होती रस्तेमें रेलके स्टेशनोंसे कोस १।२।४।१० पै तीर्थहै परन्तु अजानपनेसे वहां जानेमें नहीं आता बलके बहोत श्रावकलोगोंको तो मालुमभी नहीं होगा कहां२ तीर्थ हैं भगवानके कल्या० क्या२ भएहैं उन नगरियोंका शास्त्रोंमें क्या नामथा कालके दोषसें अब क्या नामसें प्रसिद्धहैं सो हाल सर्व इस पुस्तकमें खुलासे लिखाहै दर्पणवत् जिसके वाचनेसे साधर्मी भाईयोंको मालुम होगा तो तीर्थयात्रामें साहज मिलेगी अवश्य सर्व तीर्थोंकी फरसना करेंगे कल्याणक भूमी वगैरा जो रेलके रस्तेमें आते जाते पड़तीहै और खरच तो उतनाही आने जानेमें लगता है परन्तु अजानपनेसे तीर्थादिककी फरसना उदे नहीं आतीहै कैसे२ उत्तम स्थान लाखों रुपये खरचके पुण्यवानोंने बनायेहैं चमत्कारीक देखने फर्सने योग्य।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री यशोविजयजी जैन ग्रंथमाळा भावनगर

॥ यह पुस्तक १००००छपोहै पहले सब जगे
जायगो जब वहांका श्रीसंघ वा मन्दिरजीके भंड
कीमत भेजकर जोत्ता पुस्तक उस मुजब भे
कीमत पुस्तकको मगानेका यह है उसी कीमतसे और पुस्तक छपाकर तयार रहा करेगो जो दीसावर वाला मगावेगा कीमत भेजकर उसी वखत भेजी जायगो मुनासिवहै ठीकाने२ के श्रीसंघ को वा मं०के भंडारो लोगोंको इस पुस्तकको लोगोंमें प्रसिद्ध प्रचलित करे बड़े लाभ उपगारका कार्य्यहै और हमेसा मन्दिरजीके भण्डारोंमें १०० या दो सौ पुस्तक मंगायके रखे बिशेष लागतको जिनस नहींहै थोड़ा द्रव्य लगेगा जिस वखत जिसको दरकार होगी उसे मिलेगो स्वदेशी प्रदेशी को तथा एकट्ठीपुस्तक मंगानेसे डांकका मासूल कमती लगेगा मनीआडर भेजनेमें सुबीता होगा।

॥ यह पुस्तकको छपाकर साधर्मी भाईयोंके हाथ विक्री होती रहेगो हमेसा उसका मुनाफा जो कुछ आता रहेगा उसे तीर्थों के मं० ध० का जीर्ण उद्धार होता रहेगा सम्मेतशिखरजी सें लगाय हस्तिनापुरजी तकके तीर्थोंका वा जीर्ण उद्धारका लाभ समझकर पुस्तकको कीमत लगाई गईहै व्योपारके लाभ नीमत नहीं।

॥ इस पुस्तको श्रीगुरुवादिक पण्डितराजको संमती लेकर आज्ञा अनुसार श्रीसंघ के साहाज्य से छपाई है रचना करन हार काशी बनारस निवासी सीतलप्रसाद छाजेड जौहरीने स्वधर्मी भाईयों के लाभार्थ श्रीतीर्थमाला अमोलकरत्न प्रकाशित किया इसके बनाने में वा सुध करने में जो कोई मन्द मती पनेसे वा नजर दोषसे वा छापेके दोष से कोई अक्षर काना मात्रा की भूल रह गई होय तो-मय मिच्छामि दुक्कडंग देता हूं विद्वज्जन लोग सुध करके पढ़ेंगे अनुग्रह करके सं० १९५० मि० आसाढ़ सु० ५ श्रीरस्तु श्रीकल्याणमस्तु ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com